कविता का स्पेस, मनुष्यता का स्पेस है- नरेंद्र मोहन

साहित्य अकादेमी द्वारा अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम कवि संधि में प्रख्यात कवि एवं नाटककार नरेंद्र मोहन को आमंत्रित किया गया था। कविता-पाठ से पहले अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि आज कविता हाशिए पर है और उसका स्पेस निरंतर छूटता जा रहा है। मेरे लिए कविता का स्पेस, मनुष्यता का स्पेस है और नए-नए प्रयोगों के साथ जीने का ढंग है। कविता के साथ में मुझे जिलाए रखा है। मैं काव्य भाषा को लेकर अभी अभी नए-नए प्रयोग करता रहता हूं।

कार्यक्रम का आरंभ उन्होंने विभाजन संबंधी तीन कविताओं से किया। इस संदर्भ में उन्होंने श्रोताओं को बताया कि वे लाहौर में 12 साल रहे और उनकी कविताओं में यह दर्द अनायास आता जाता रहता है। उन्होंने इस श्रृंखला की- 'वह घर', 'दिल्ली में लाहौर, लाहौर में दिल्ली', 'मैं ही मरा हूं आस-पास' कविताएं प्रस्तुत कीं। इसके बाद उन्होंने 'शब्द', प्रेम, 'उसके चले जाने के बाद' एवं पेंटिंग्स पर आधारित कविता श्रृंखलाओं की कई कविताएं प्रस्तुत कीं। 'नाच और कठपुतली श्रृंखला की कविताएं भी श्रोताओं को बेहद पसंद आईं। कार्यक्रम में सत्यव्रत शास्त्री, कुसुम अंसल, सौमित्र मोहन, मोहनदास नैमिषराय, डॉ. सादिक, श्यामसिंह शशि, बी.एल. गौड़, कमल कुमार, डी.के. बहल, सुरेश शर्मा, लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, ब्रजेंद्र त्रिपाठी एवं प्रताप सिंह आदि कवि एवं लेखक उपस्थित थे। नरेंद्र मोहन के कविता पाठ के बाद उपस्थित श्रोताओं के साथ संवाद सत्र के अंतर्गत उनसे उनकी रचना प्रक्रिया को लेकर कई सवाल भी पूछे गए जिनके उन्होंने समूचित जवाब प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

-के. श्रीनिवासराव